ऐतिहासिक उपन्यास

डॉ0 वन्दना श्रीवास्तव
एसो0प्रो0 हिन्दी विभाग
श्री जे0एन0एम0पी0जी0कॉलेज
लखनऊ

अर्थ

- ऐतिहासिक बोध वाला साहित्यकार इतिहास की सामग्रियों को नये सन्दर्भों में स्वीकार करता है। ये नये आधुनिक सन्दर्भ इतिहास की मृत सामग्री को नया स्वर प्रदान कर उन्हें वर्तमान का जीवन देते हैं, उन्हें इतिहास के गह्वर से निकाल कर गतिमान जीवन के मैदानों में ला खड़ा करते हैं।

- राम दरश मिश्र

ऐतिहासिक उपन्यास के स्रोत

- इतिहास एवं स्थानीय इतिहास
- खंडहर एवं स्मारक
- अंतःसाक्ष्य एवं पूर्व लिखित साहित्य
- परंपराएं एवं किंवदन्तियाँ
- लोक कथाएं एवं जनश्रुतियाँ

हिन्दी में ऐतिहासिक उपन्यासों की परम्परा

- 1. पूर्व प्रेमचन्द युग – 1880 – 1918
- 2. प्रेमचन्द युग – 1918 – 1936
- 3. प्रेमचन्दोत्तर युग – 1936 – अब तक

पूर्व प्रेमचन्द युग : 1880 – 1918
प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासकार एवं उनके उपन्यास

- किशोरी लाल गोस्वामी – लवंगलता, तारा वा क्षात्र कुल कमलिनी, सुल्ताना रज़िया बेग़म वा रंगमहल में हलाहल, लखनऊ की कब्र वा शाही महलसरा
- गंगा प्रसाद गुप्त – नूरजहाँ, हम्मीर
- मथुरा प्रसाद शर्मा – नूरजहाँ बेग़म व जहाँगीर
- मिश्र बन्धु – वीरमणि

पूर्व प्रेमचन्द युग : महत्वपूर्ण तथ्य

- तथ्य, कल्पना व रचनात्मक पक्ष की अपेक्षा कौतूहल, साहसिकता, मनोरंजन की प्रधानता
- ऐतिहासिक यथार्थ की उपेक्षा
- चरित्र चित्रण की अपेक्षा कथानक को महत्व
- उर्दू मिश्रित सरल हिन्दी का प्रयोग

प्रेमचन्द युग : 1918 – 1936
प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासकार एवं उनके उपन्यास

- वृंदावन लाल वर्मा – गढ़ कुण्डार, विराटा की पद्मिनी
- भगवती चरण वर्मा – चित्रलेखा
- चतुरसेन शास्त्री – पूर्णाहुति

प्रेमचन्द युग : महत्वपूर्ण तथ्य

- इतिहास और कल्पना का समन्वय
- रोमांटिक आदर्श व आंचलिकता का पुट
- पूर्व युग की कमियाँ अपेक्षाकृत कम हुईं
- भाषा पर विशेष ध्यान

प्रेमचन्दोत्तर युग : 1936 – अब तक

प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासकार एवं उनके उपन्यास

- वृंदावन लाल वर्मा – झाँसी की रानी, मृगनयनी
- चतुरसेन शास्त्री – वैशाली की नगरवधू, सोमनाथ
- रांगेय राघव–मुर्दो का टीला, महायात्राःअंधेरारास्ता
- राहुल सांकृत्यायन – सिंह सेनापति, जय यौधेय

- अमृत लाल नागर – शतरंज के मोहरे, सुहाग के नूपुर
- भगवती चरण वर्मा – भूले बिसरे चित्र
- यशपाल – अमिता, दिव्या
- हजारी प्रसाद द्विवेदी – बाणभट्ट की आत्मकथा
- मन्मथ नाथ गुप्त – नया सवेरा, अपराजिता
- आनंद प्रकाश जैन – कुणाल की आँखें
- नरेन्द्र कोहली –दीक्षा, महासमर, तोड़ो कारा तोड़ो
- शिव प्रसाद सिंह – नीला चाँद

प्रेमचन्दोत्तर युग : महत्वपूर्ण तथ्य

- उच्चकोटि की कलात्मकता
- नवीन ऐतिहासिक बोध
- ऐतिहासिक कालखण्ड की जीवंतता के साथ ही उसे तत्कालीन समाज की ज्वलंत समस्याओं के साथ जोड़ा गया
- कहीं कहीं जीवन दर्शन का बोझ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को धूमिल कर देता है

धन्यवाद